ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 253-254
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

विश्वबोध की संवाहिका कलाकृतियाँ

संजीव किशोर गौतम
एसो0 प्रोफेसर, ललित कला संकाय, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनउ विश्वविद्यालय,
लखनउ (उ0प्र0) भारत

Received- 19.07.2020, Revised- 25.07.2020, Accepted - 29.07.2020 E-mail: artistskgautam@gmail.com

सारांश : ***कृतित्व नर के कर्म का पर्याय है,***
जीव का निज प्रति सच्चा न्याय है।
कर्म कौशल से सजी है यह धारा,
मुक्ति पाने का सरल उपाय है।

सृजन कर्ता समाज के मध्य रहने वाला उसी की एक कडी होता है। वह एक ओर अपनी मानसिक सपनो की दुनिया में विचरण करता है और दूसरी ओर सृष्टि के अन्य किया कलापों से भी सम्बद्ध होता है, स्वप्न या कल्पना और सृष्टि–गत यथार्थ के मध्य निरन्तर द्वन्द की स्थिति होती है इसी द्वन्दात्मक स्थिति को सुनिश्चितरूप प्रदान करने की क्रिया के साथ कलात्मक सृजन का प्रारम्भ होता है। स्पेन्डर इसी बात को अन्य शब्दों में इस प्रकार से कहते है" सृजन तत्व ऐसे व्यक्ति के व्यक्तिगत स्वपनों से सम्बद्ध है जो समाज में विघटित होती मूल्यों का प्रत्यक्षदर्शी है, इस प्रत्यासित विघटन से पृथक होकर वह अपने नवीन मूल्यों का निर्माण करता है वह वर्तमान संदर्भ का उपयोग कर अपने प्रयोग से उसे अभिनव शक्ति प्रदान करता है।"

कुंजीभूत शब्द– कल्पना और सृष्टि, निरन्तर, द्वन्दात्मक, सुनिश्चितरूप, कलात्मक सृजन, प्रारम्भ , व्यक्तिगत ।

श्री अशोक कुमार सिंह उत्तर प्रदेश के वरिष्ठ कलाकारों मे से एक ऐसे प्रयोगवादी कलाकार है जो दृश्य को अभ्यंतर से जोड़ते है और उसके परे जाकर उसे नयी–नयी सम्भावनाओं के साथ उकेरते है। उनकी कलाकृतियॉ उन्हें बहुपठित सिद्ध करती है, क्योंकि उनके परम्परा के सूत्र निबद्ध मिलते है। इनकी कृतियों में आखों को आकृष्ट करने की सामग्री भर ही नही होती वरन् मन को संतृप्त करने वाली संवेदना और विचारों को उत्तेजित करने वाली दार्शनिक प्राववत्ता भी संगुम्फित मिलती है। इसमे भारतीय मनीषा को पुर्नप्रस्तुत करने की बेचैनी और सौन्दर्य को नया रूप देने की तत्परता का अदभुत संयोग देखा जा सकता है। अशोक कुमार सिंह के अधिकतर कलाकृतियों को देखकर ऐसा लगता है कि ये कृतियॉ दृश्यों, रंगों, रेखाओं आदि के अनन्त संयोजनो द्वारा अदृश्य एकात्मकता की ओर ले जाने को अग्रसर है। ऐक्रेलिक माध्यम में सफेद कैनवास पर उकेरी गयी कई ज्यामितिय आकारों में विभाजित होने वाली संयोाजन मे चटक रंगो से पूर्ण चित्र निसंदेह बेहद उत्तेजक कलाकृतियॉ है। इसमे हर्ष–विशाद, सुख–दुख, संयोग–वियोग आदि भावों की अन्नतता रेखाकिंत है। इन रचनाओं में यायावर कलाकार ने अपनी परम्परा और जीवनानुभवों को एक करने का सफल प्रयास किया है। ऐसा लगता है कि श्री अशोक सिंह ने इन कृतियों में नृत्यांगनाओ के साहित्य का भी अध्ययन किया है। इस प्रकार इनकी यह कृतियॉ कला का एक समवाय भी बनाती है। यह सचेष्टता उनकी अनेक कृतियों में सक्रिय है। कला के अविमानित आकाश में अशोक सिंह की कलाकृतियॉ विश्वबोध की संवाहिका है। उनमें समग्रता को पाने की कोशिश है।

दृश्य कला को अनेक माध्यमों में दक्ष उनका कलाकार–मन फोटोग्राफी तकनीकि विकास के साथ–साथ चलता है और उसके गूढ रहस्यों की तह तक जाता है। दृश्य कला के सभी अनुशासनों में तकनीकि की अपनी महत्ता है। चाहे फोटोग्राफी में आधुनिक प्रयोग हो या मूर्तिशिल्प में पारम्परिक विशेषता कलाकार इन सभी तकनीकि की विशेषताओं को समझकर उसके अद्यतन रूप तक जाता है और सभी कलानुशासनो के साथ इस रूप की संगति खोजता है इसलिए श्री अशोक कुमार सिंह की कल्पनाशीलता तकनीक की गति के साथ विकसित होती है और कला की दुनिया में भ्रमण करती है उनकी प्रस्तुतियों में चिर परिचित संदर्भ भी नये रूपों में उभरते है।

फोटोग्राफी में गहन अभिरूचि एवं प्रयोग करने वाले अशोक सिंह दृश्य और परिपेक्ष्य के साथ–साथ प्रकृति के सौन्दर्य पशु–पक्षियों के अनोखे संसार के बीच ऐसा संतुलन बनाते है कि दृश्य को नयी गरिमा मिल जाती है। आगरा, बनारस, लखनऊ, दिल्ली, मुम्बई, राजस्थान आदि शहरो के ऐतिहासिक स्थलो के साथ–साथ पहाड़ों, झीलों, पथरीलें रास्तों, जंगलों

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-13, No.-1, Issues-16 YEAR- June. -2020

और जू के पक्षी, पशुओं के सजीव छायाचित्रों को कैमरे में कैद करते हुए इस गरिमा का आभास कराते है। फोटोग्राफर एवं सृजनात्मक कलाकार की प्रतिमा वहॉ दिखाई देती है जहॉ वह उपेक्षित तथ्यो को सामने लाता है। ऐतिहासिक स्मारको से जुडे ऐसे असंख्य तथ्य आज भी अलक्षित है इसलिए वे बार–बार स्मारको की ओर भागते है। अशोक सिंह की फोटोग्राफी ने डिजिटल तकनीकि का भरपूर उपयोग करते हुए उम्र के इस पडाव में भी प्रयोगात्मक युवा प्रतिमा के समान ही अपने लक्ष्य का अनुसंधान करती है।

श्री अशोक सिंह ने अब तक करीब 25 से भी ज्यादा एकल प्रदर्शनियों द्वारा अपनी कलाकृतियों की नुमाईस देश के विभिन्न स्थानो पर किया है, इनकी चित्र, मूर्ति एवं छायाचित्रों की प्रदर्शनी आम जीवन से चुने गये विषयों को प्रस्तुत करती है जो भारतीय संस्कृति व परम्परा का प्रतिनिधित्व करती है। श्री अशोक सिंह के चित्रों के विषय में विविधता है। साधारण जनजीवन के हर पहलू को उन्होने अपनी तुलिका से छुआ है। उन्होनें प्रकृति के कलात्मक स्वरूप को जीवन्त बनाने का सफल प्रयास किया है। नदी के किनारों, घाट, झरनों, पेड़–पौधों आदि के साथ मानवाकृति का संयोजन जल रंग में चटक रंग योजना से उसकी पारदर्शिता का सुन्दर मेल प्रस्तुत किया है।

श्री अशोक सिंह ने अपनी कविताओं की लम्बी श्रृंखला के माध्यम से भारत के जन–जीवन के उन विभिन्न पहलुओं का रसास्वादन कर चित्रों की रचना की है जो हमारे सभ्य समाज से पेड़ सड़क के किनारे टेन्ट और झुग्गी–झोपड़ियों में अपनी सुन्दरता को चिथड़ो में छुपाये हुए है। उसमें नृत्य करती स्त्री, उसके लहगें की फरहन, उन स्त्रीयों के नुकीले नक्श–नयन और काले स्लेटी परन्तु अत्यधिक आकर्षक देह के रंगों के साथ चॉदी के पारम्परिक आभूषणों की चमक, ढोलकिया आदि अपने पूरे फार्म में प्रर्दशित है। सभी मानवाकृतियॉ रिदम को प्रस्तुत कर रही है। लाल और चटक नारंगी रंग का प्रयोग इनके दृश्य चित्रों के वास्तविक धरातल पर अधिकता से होते हुए भी चित्र ऑखों में खटकता नही है। वास्तव में चित्र को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि आकृतियों के साथ–साथ रंगों के विविध स्ट्रोक भी मानो नृत्य कर रहे हो। प्रकृति चित्रो में कई वातावरण में नमी पसर जाती है, कई चित्रों में ऐसा प्रतीत होता है मानों सड़क पर पानी पड़ा है, पेड़ो से पानी टपक रहा हो, तो वही कुछ शाम के धुधलके का समय हो।

श्री अशोक सिंह ने आगरा कालेज आगरा से चित्रकला विषय में उस समय के अनुरूप ही परामपरिक तौर से अपनी कला शिक्षा पूर्ण की थी। परन्तु भारतीय समकालिन कला के विकास में निरन्तर प्रयोग परक यात्रा में अपनी सहभागिता आज के सौन्दर्य के अनुरूप विकसित कला संस्थानों से शिक्षित कला विद्यार्थियों के जैसा ही किया है। इनके पारम्परिक चित्रों के मूल्याकन भी कला सौन्दर्य को परिभाषित करती है, जिसमें स्त्री की कमनीयता, उसके शरीर के लचक में रिदम है वह फूट पड़ रहा है। इसी प्रकार नदी में स्नान करके बाहर निकलती स्त्री का मांसल सौन्दर्य उसकी अलहड़ता नर्म रंगों में भी अपना एहसास बरकरार रखे हुए है।

श्री अशोक कुमार सिंह का कहना है कि वे प्राकृतिक दृश्यों के साथ आम जीवन में भी एक प्रवाह एक लय पाते है जो उनके अवचेतन मन को निरन्तर सृजनात्मक गतिविधियॉ करने के लिए प्रेरित करता रहता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कला त्रैमासिक– राज्य ललित कला अकादमी, उ0प्र0, जुलाई से सितम्बर– 2002
2. कैट लॉग– द्वश्य कला संकाय, बी0एच0यू0– 2007–08
3. कैट लॉग– श्री अशोक कुमार सिंह के एकल प्रर्दशनीयों से।
4. वेबसाइड–श्री अशोक कुमार सिंह।
5. साक्षात्कार।

*****